OM 7 INITIAL_Page 1 and 2 10-07-2014 21:36 Page 7

दिल्ली। भारतीय रेलमंत्री सदानंद गौड़ा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. शिविका तथा न्यायाधीश वी. ईश्वरय्या।

भोपाल-म.प्र.। स्वर्ण जयंती उद्यान,कोलार में आयोजित 'पर्यावरण संरक्षण राजयोग शिविर' में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. किरण।

कमला नगर-आगरा(उ.प्र.)। चिल्ड्रेन समर कैम्प के समापन के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. विमला,क्षेत्रीय प्रशासिका, ब्र.कु. नेहा, ब्र.कु. सपना, ब्र.कु. सीमा तथा बच्चे।

मणिनगर-अहमदाबाद। सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंचासीन ब्र.कु. हंसा, ब्र.कु. मोहन, मधुसूदन दास जी महाराज, ब्र.कु. नेहा, छगनदास जी महाराज, ब्र.कु. मनोज, ब्र.कु. सविता माता व ब्र.कु. धर्मिष्ठा।

अजमेर-धोलाभाटा। अमरनाथ की झांकी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.योगिनी तथा नगर के गणमान्य जन।

उस्मानाबाद-आनंदनगर। स्थानीय गी.चा. की ओर से आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में डॉ. गपाट,आर्ट ऑफ लिविंग के कार्यकर्ता, अशोक पवार,सुप्रसिद्ध शिक्षा संचालक,सरस्वती विद्यालय, उस्मानाबाद को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुरेखा।

प्रकृति की पीड़ा

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर

-ब्र.कु.ललित शांतिवन

यह विष द्रव्य या मल जिस भी अंग में इकट्ठा हो जाता है, रुक जाता है और उस अंग के नाम के आधार पर रोग का नाम दे दिया जाता है कि हृदय की धमनियों में खराब कोलेस्ट्रोल के रूप में इकट्ठा हुआ तो उसे हृदय रोग का नाम दे दिया गया। मस्तिष्क की धमनियों में इकट्ठा हुआ तो उसे खून का थक्का जमने के कारण ब्रेन हेमरेज होने का नाम दिया। वहीं गांठ के रूप में इकट्ठा होता गया तो उसे ट्यूमर का नाम दे दिया गया। कहीं पथरी का नाम दे दिया गया। फेफड़ों में सूख गया तो अस्थमा/दमा का नाम दिया गया। इसी प्रकार चमड़ी के रोग, हड्डियों के रोग, कान-नाक-गले के रोग आदि-आदि हज़ारों नाम दे दिये गये जबकि बात एक ही थी - विषद्रव्य-मल-कचरा इकट्ठा होना। इस सत्य को जानने के बाद रोगों से घबराने की ज़रूरत नहीं है कि इसे वह रोग हो गया या उसे वह रोग हो गया। नाम कितने ही भयंकर, डर पैदा करने वाले क्यों न हों पर अब घबराने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि अब हमें सभी रोगों का कारण समझ में आ गया है। जब कारण का पता लग गया तो निवारण भी मिल ही जाएगा। अभी तक तो हमारा यह हाल था कि रोग का कारण ही पता नहीं लगता था। आपको एक आश्चर्यजनक बात बताता हूँ। मैं सन 1993 में बड़ौदा में अपनी मौसी के यहां रहकर सी.ए. की पढ़ाई कर रहा था। उनका छोटा बच्चा बीमार हो गया। उसे निरंतर 3-4 दिनों तक अस्पताल ले जाया गया। मैंने मौसाजी से पूछा -'डॉक्टर साहब क्या कहते हैं, अक्कू (आकाश उसका नाम था) को क्या बीमारी हुई है?' तो मौसाजी ने जो उत्तर दिया वह दु:ख मिश्रित आश्चर्य पैदा करने वाला था। उन्होंने बताया कि डॉक्टर अलग-अलग प्रकार की दवाइयों का प्रयोग कर रहे हैं, कोर्स बदल कर देख रहे हैं। रोग जिस भी दवा से ठीक होगा उसके आधार पर पता चलेगा कि उसको कौनसा रोग है!

अब इससे बड़ा अज्ञान क्या हो सकता है! उस बेचारे छोटे से, कोमल से बच्चे पर भयंकर रासायनिक दवाइयों, इंजेक्शनों के प्रयोग किये जा रहे हैं। प्रयास करो और भूल सुधारो की पद्धति से उपचार किया जा रहा था, और ज़्यादा विषद्रव्य शरीर में डाले जा रहे थे।

दिव्य जीवन शैली की जो स्वर्णिम आहार पद्धति आपको बताई जा रही है वह पहले हमने खुद अपने पर प्रयोग की है, परिणाम देखा है फिर हम आपको बता रहे हैं। परन्तु आधुनिक चिकित्सा विज्ञान नई-नई दवाइयों का प्रयोग पहले कुत्ते, बिल्ली, खरगोश, चूहे, मुर्गियों आदि पर करते हैं फिर मनुष्य का नम्बर आता है। आधुनिक ज्ञान के नाम पर मनुष्यों के स्वास्थ्य की कब्र खोदी जा रही है। शरीर पर किया जाने वाला यह अत्याचार किसी दानवीय या पाशविक वृत्ति से कम नहीं है और प्रकृति भी गिन-गिन कर इसका बदला लेगी।

जयपुर की नीहारिका, उम्र-27 वर्ष, पिछले 10-12 वर्षों से गर्भाशय में गांठ नामक बीमारी से ग्रसित थीं। वजन 60 किलो से भी बढ़ता जा रहा था। शरीर में हार्मोन असन्तुलन से निराशा बढ़ती जा रही थी। एलोपैथी एवं आयुर्वेदिक दवाइयों पर 80,000 रुपये से ज़्यादा खर्च हो चुका था। फिर भी कोई राहत नहीं मिली। स्वर्णिम आहार के प्रयोग से 3 मास में 75 प्रतिशत ठीक हो गई है। वजन भी आठ किलो कम हो गया है।

तो आइये, स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाकर इन गोली-दवाई-इंजेक्शन-बीमारी-अस्पताल-डॉक्टर-इलाज से मुक्ति पायें और सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करें।

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

अपेक्षा व प्राप्त होने वाले परिणाम को खुशी का पैमाना न बनाएं

प्रश्न:- लेकिन अब मैं अपने लिए ये कर रहा हूँ।

उत्तर:- मैंने किया क्योंकि मुझे पता था ये करने से मेरे पैरेंट्स को खुशी मिलेगी। लेकिन ये थॉट तो मेरे साथ ही रहा कि इसमें मेरे पैरेंट्स की खुशी थी और इसीलिए मैंने इसे किया।

प्रश्न:- लेकिन आपने सोच-समझकर उस समय किया था। देखो आपने उस चीज़ को एक बार अपना बना लिया तो फिर आपके पैरेंट्स उस समीकरण से बाहर हो जाते हैं। आपने जो निर्णय लिया अपने लाइफ में चाहे वो कैरीयर का है, चाहे वो आपके संबंधों का है फिर उसकी ज़िम्मेवारी आपकी हो जाती है।

उत्तर:- मैं एक ऐसे भाई को जानती हूँ जिनका एक लड़की के साथ अच्छा संबंध था। लेकिन उसकी माँ उसे पसंद नहीं करती थी। भले उनके बीच का संबंध प्रगाढ़ था लेकिन अपने पैरेंटस की खुशी के लिए उसने उसे छोड़ दिया। ऐसा आजकल बहुत सारे बच्चों के साथ होता है। अब भले वो दूसरी तरफ सेट भी हो जाते हैं, उसकी कहीं और शादी भी हो जाती है। लेकिन वो खुश नहीं होता है क्योंकि उसके माइंड के अंदर यही थॉट होती है कि ये सब मैंने अपनी माँ की खुशी के लिए किया। फिर वो लड़का सोचता है कि मैंने ये सही किया या नहीं किया, लेकिन मेरी खुशी तो वहां थी। और यही थॉट उसके मन में बार-बार आती रहती है कि ये मैंने अपने पैरेंट्स की खुशी के लिए.....। इससे क्या होता है कि जितना समय वो थॉट आपके मन में रहेगा आप दु:ख में रहेंगे। और फिर वो आपके संबंधों में, आपके पैरेंट्स के साथ, कभी न कभी तो वो सारा बाहर निकल ही आयेगा कि ये मैंने अपनी खुशी के लिए नहीं बल्कि आपकी खुशी के लिए किया।

ब्र. कु. शिवानी

तो इससे हमारे संबंधों पर कितना गहरा असर पड़ता है।

प्रश्न:- मेरी अपेक्षायें उनसे इतनी ज़्यादा हो जाती हैं कि मैं उनकी खुशी की परवाह ही नहीं करता हूँ?

उत्तर:- विशेषकर अगर मैंने आपके लिए कुछ किया ये सोचकर कि कभी आप भी मेरे लिए करेंगे। अगर आपने नहीं किया तो मैं कहूंगा ना कि मैंने आपके लिए क्या-क्या किया और मेरी लिस्ट तो मानस पटल पर हमेशा रेडी होती ही है कि मैंने आपके लिए क्या-क्या किया और आपने क्या किया।

प्रोदातूर-वाय.एम.आर. कालोनी(आ.प्र.)। फिल्म एक्टर श्रीकांत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. हेमा ।

ऐसा यह बहुत करके व्यवसायिक संबंधों में होता है। फिर तो वो खुद भी दर्द में रहेंगे, पैरेंट्स के साथ जो एनर्जी विनिमय होगी वो भी दर्द वाली, फिर आप जिस भी प्रोफेशन में या जहां भी आपके रिश्ते जुड़े होंगे, वहां भी लोग दु:ख में रहेंगे। और ये सब इसलिए हो रहा था कि मुझे पैरेंट्स को खुशी देनी है। इतना सारा दु:ख-दर्द क्रियेट करके क्या आप पैरेंट्स को खुशी दे पायेंगे? नहीं। थोड़ा समय लो अपने आपको समझाओ कि उन्हें खुशी देना, यह हमारा निर्णय है।

ये जो अपेक्षायें हम रखते हैं और उसे पूरा करने के प्रयास में जो सारा दिन लगे हुए हैं। ये भी हमारी स्थिति को ऊपर-नीचे करता है। एक है आप अपेक्षा भले रखो, आप ऐसा करेंगे या नहीं करेंगे, लेकिन मेरी खुशी उस पर निर्भर नहीं है। उससे क्या होगा आप अपेक्षा रखेंगे लेकिन अगर वो पूरी नहीं हो पायी तो आप दु:खी नहीं होंगे। सारी प्रतिक्रिया तब आती है जब हम दु:खी हो जाते हैं। उस समय तो अपेक्षा अलग हो जाती है। लेकिन मैं दु:खी हो गयी तब मैं रियेक्ट करती हूँ। अगर मैं दु:खी नहीं हुई तो रियेक्ट नहीं करूंगी, यदि रियेक्ट नहीं करूंगी तो आपको सशक्त करूंगी। बच्चे को अगर परीक्षा में 90 प्रतिशत मार्क्स नहीं मिला, लेकिन अगर मैं दु:खी नहीं हुई, गुस्सा नहीं किया तो मैं उसे स्वीकार करूंगी, उससे प्यार से बातें करूंगी ताकि वो अगली बार इससे अच्छा परफॉरमेंस दे सके। यदि मैं गुस्सा होकर बोलूं कि, क्या हम तुम्हारे ऊपर इतनी मेहनत इसलिए करते हैं कि तुम हमारी अपेक्षाओं को पूरा नहीं करो। हमारी यह भाषा उसे उत्साहित नहीं करती है बल्कि उसे और ही हीन भावना से ग्रसित कर देती है।- क्रमश: